बाल–कहानी

* डॉ.दिनेश पाठक'शशि'
28 सारंग विहार,
मथुरा–6
मोबा–09412727361

–नई शिक्षा नई दिशा–

पार्क के रंग–बिरंगे फूल हवा के झोकों के साथ इधर–उधर झूम रहे थे। ऐसे में पूरी कालोनी के बच्चे पार्क में खिलखिलाते हुए तितलियों के पीछे दौड़ कर खेल रहे थे, किन्तु सुनील एक कोंने वाली बैंच पर उदास बैठा था। उसके साथियों ने उसे अपने साथ खेलने के लिए बुलाया भी, पर स्वयं खेलना तो दूर उसे आज बच्चों का खेलना भी अच्छा नहीं लग रहा था। अतः वह उसी स्थान पर बैठा रहा।

दफ्तर से लौटते वक्त उसके पिताजी ने उसे देख लिया और आवाज लगा दी। आवाज सुन कर वह पिताजी के पास चला गया।

'क्या बात है बेटा? बहुत उदास लग रहे हो आज'' – पिताजी ने सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा तो वह रो पड़ा।

''बोलो बेटे, क्या बात है?''

''पिताजी मैं अब पढ़ने नहीं जाऊँगा कभी।''

''क्यों बेटे, अब क्या हुआ?'' – पिताजी ने आश्चर्य चकित, सुनील को ऊपर से नीचे तक देखा।

'मुझे अनिल भैया ने फिसड्डी कह कर चिढ़ाया है'' – कह कर सुनील फिर रोने लगा।

पिताजी सोचने लगे, अनिल–सुनील दोनों भाई हमेशा साथ बैठ कर पढ़ते व खेलते–कूदते हैं। फिर भी अनिल अपनी क्लास में प्रथम आता है जबकि सुनील पास ही हो पाता है। इस बार तो छमाही परीक्षा में बहुत ही कम अंक हैं सुनील के, इसलिए चिढ़ा दिया होगा अनिल ने । पर उसे रोता देख पिताजी को दया आ गई इसलिए उसी तरह सिर पर हाथ फिराते हुए उन्होंने सांत्वना दी–

''यह बात तो ठीक है लेकिन एक बात बताओ, यदि हम तुम को एक ऐसी तरकीब बता दें जिससे तुम भी अपनी क्लास में प्रथम आओ तो भी तुम पढ़ाई बन्द करना चाहोगे?''

''क्या मैं भी प्रथम आ सकता हूँ पिताजी?'' – सुनील ने आश्चर्यपूर्वक उत्सुकता से पूछा।

''क्यों नहीं? तुम हमेशा प्रथम आ सकते हो।

'सच तो फिर मैं पढ़ाई बन्द नहीं करूँगा आप बता दीजिए न वह उपाय।

''ठीक है। पहले घर चल कर हाथ मुँह धो लो। मैं भी कपड़े बदल लूँ फिर बताऊँगा।''

हाथ मुँह धोकर वह ड्राइंगरूम में आया तब तक मम्मी ने चाय बना दी। पिताजी भी कपड़े बदल कर आ गये।

''हाँ पिताजी अब बताइये।''– सुनील की उत्सुकता देख पिताजी मुस्करा दिये– हाँ बेटे, अब बताता हूँ, लेकिन अपने अनिल भैया को भी तो बुला लो। अरे लो, वह अपने आप ही आ गया।''

हाँ तो मैं कह रहा था कि बेटे, सबसे पहली बात तो यह जान लो कि विद्यार्थी न तो होशियार होता है और न फिसड्डी। स्कूल में प्रवेश लेते समय सब एक जैसे ही होते हैं।

''ऐसा कैसे हो सकता है पिताजी?– सुनील बोल पड़ा।

ऐसा ही होता है। बाद में पढ़ने के अपने–अपने तरीके व मेहनत के आधार पर होशियार और कमजोर बनते हैं सब। इस समय मैं उन्हीं कुछ तरीकों के बारे में बता रहा हूँ जिनको अपना कर फिसड्डी से, फिसड्डी विद्यार्थी भी क्लास में प्रथम आ सकता है।

''बताइये न पिताजी, जल्दी से फिर।''

तो सुनो–स्कूल खुलने के बाद, जब अपनी पुस्तकों व विषय की जानकारी हो जाए तो घर पर पढ़ने के लिए समय सारिणी तैयार करो जिसमें सभी विषय के लिए उचित समय निर्धारित करो। ऐसा करने से प्रतिदिन सभी विषय की पुनरावृत्ति भी होगी और पढ़ाई बोझ भी नहीं मालूम होगी।

दूसरी बात यह है कि जब भी पढ़ो मन व दिमाग दोनों ही पढ़ाई की तरफ होना चाहिए। ऐसा न हो कि आँखें किताब के काले अक्षरों पर टिकी हैं और मन गेंद बल्ला या दोस्तों के बीच भटक रहा है।

"हाँ, ऐसा तो होता है पिताजी।"

बस तो अब पता चल गया, कमी क्या रह जाती है? जाओ, आगे से इन दो बातों का ध्यान रखा तो इस वर्ष अवश्य प्रथम आओगे तुम भी अनिल भैया की तरह। बाकी बातें फिर बताऊँगा।

"धन्यवाद पिताजी, इस वर्ष ही नहीं अब हर वर्ष प्रथम आऊँगा मैं। सुनील ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा तो मम्मी–पापा दोनों मुस्करा उठे।

"और फिर मैं भी कभी फिसड्डी नहीं कहूँगा तुमको।" अनिल की बात सुन सभी खिलखिला उठे। सुनील भी हँस पड़ा। नई दिशा, जो दीख गयी थी उसे सफलता की। ***